Theme: Leading Good Governance in Schools

Shri Kamlesh Kumar

Head Master
Government Middle School Hajipur, Kako
Jehanabad, Bihar
Email id: krkamlesh394@gmail.com
Mobile no.: 7061596156

1. विद्यालय की भौगोलिक स्थितिः

नन्दन–वन की छवि दर्शाती तरूपुंजो एवं कुसुमावालियों से आच्छादित एक मुख्य द्वार के साथ सभी दिशाओं से ऊँची चहारदीवारी से सुरक्षित 01.02 एकड़ भूखंड के बीच अवस्थित यह विद्यालय जनपद जहानाबाद के शैक्षणिक वातावरण का मुकुटमणि है। शान्ति निकेतन की तरह प्रकृति के उन्मुक्त वतावरण में पलने वाले शहर के शोर से दूर जिला मुख्यालय जहानाबाद से 03 कि0मी0 की दूरी पर स्थित इस विद्यालय के पश्चिम की ओर दरधा नदी प्रवाहित है जबकि पूरब दिशा में आर्दष गाँव हाजीपुर है। भौगोलिक रूप से अक्षांष ; स्ंजपजनकमद्ध 25.22069 एवं देशान्तर ;स्वदहपजनकमद्ध 85.022074 पर अवस्थित इस विद्यालय के उत्तर में छभ्33 गुजरती है एवं दक्षिण में ऐतिहासिक गाँव धनगावाँ है। इस विद्यालय के पोषक क्षेत्र में कई गाँव आते है जिनमें हाजीपुर, नदियावाँ, अलगना, मिश्रविगहा,धनगावाँ,घटकन एवं बरबट्टा ईत्यादि प्रमुख है।

2. विद्यालय का इतिहासः

कृषि क्षेत्र से घिरे ग्रामीण परिवेश में अवस्थित इस विद्यालय की स्थापना में आर्दश गाँव हाजीपुर के ही कुछ महान स्वतंत्रता सेनानियों, पूर्वजों, बुद्विजीवियों एवं शिक्षाप्रेमी समाज सेवियों की सकारात्मक सोंच एवं भूमिका रही है। निश्चित रूप से आस–पास के क्षेत्र के लोगों के सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक उत्कर्ष के निहितार्थ इस विद्यालय की स्थापना की गयी। सबसे महत्वपूर्ण बात यह रही की बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री बिहार केशरी डॉ श्री कृष्ण सिंह के पावन कर–कमलों द्वारा ऐतिहासिक एवं गौरवशाली क्षण में दिनांक– 05 मई 1956 ई0 को विद्यालय के भवन एवं मुख्य प्रवेश द्वार का शिलान्यास सम्पन्न हुआ, जिसका दिव्य पुष्प आज विद्यमान है एवं आगे भी रहेगा।

प्रारंभिक काल में ग्रामीणों के सहयोग से सर्वप्रथम चार कमरों का खपरैल भवन बनाया गया था, जो कालांतर में धीरे–धीरे कई पक्के कमरे वाला भवन चहारदीवारी सहित तैयार हुआ।

3. विद्यालय की भौगोलिक संरचनाः

सौभाग्यवश अपनी भौतिक संरचना के क्षेत्र में भी विद्यालय संतोषप्रद स्थिति में है। बड़े परिवार वाले इस विद्यालय में मुख्य रूप से दो भवन हैं। मुख्य द्वार के सामने वाला दोमंजिला भवन सीनियर छात्रों के लिए उपयोग में आता है जबकि पूरब की ओर

स्थित छोटा सा भवन जूनियर बच्चों के लिए समर्पित है। यहाँ प्राथमिक कक्षायें चलती हैं। परिसर में शिशुओं की नर्सरी (आँगनबाड़ी केन्द्र) भी स्थित है। इसके अलावा यहाँ पेयजल हेतु समरसिंवल बोरिंग, शौचालय, रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम, ब्ल्ज स्।ठ, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, रसोईघर, प्रधानाध्यापक कक्ष, अध्यापक कक्ष, किचेन गार्डेन एवं हरे–भरे पेड़ पौधे हैं। सम्पूर्ण परिसर स्वच्छ, प्राकृतिक एवं मधुमय वातावरण से लवरेज है।

4. विद्यालय का देख–रेख एवम् रखरखावः

सरकारी नियमानुसार विद्यालय के देखरेख एवं रखरखाव हेतु विद्यालय शिक्षा समिति कार्य करती है। इस विद्यालय में विद्यालय शिक्षा समिति पूर्णतः जीवंत एवं क्रियाशील है। उनकी निगरानी एवं मार्गदर्शन में विद्यालय के विकास हेतु प्रधानाध्यापक समर्पित भाव से काम करते हैं। प्रधानाध्यापक के नेतृत्व में बच्चों के विभिन्न समूह (यथा बाल संसद, मीना मंच, इको क्लब, आपदा प्रबंधन समिति इत्यादि) कार्य करते हैं जिनसे विद्यालय का देख रेख एवम् रखरखाव सरल हो जाता है। इन कार्यों में विद्यालय के शिक्षकों एवं समुदाय की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

5. प्रधानाध्यापक की भूमिका एव ंअपेक्षायें :

किसी भी विद्यालय के सुनियोजित एवं सुव्यवस्थित संचालन में प्रधानाध्यापक की अहम् भूमिका होती है। वर्त्तमान विद्यालय में अपनी पदस्थापना (15.03.2015) के साथ ही विद्यालय एवं बच्चों के विकास की यात्रा प्रारंभ हुई। इसे निम्न प्रकार से देखा जा सकता हैः–

(प्) शिक्षकों के साथ समन्वय।
(प्प्) बच्चों के साथ आत्मीय व्यवहार।
(प्प्प्) समुदाय के साथ निकटता।
(प्ट) पाठ्येत्तर क्रियायें।
(ट) स्थानीय मानव संसाधन का सदुपयोग।
(टप्) बच्चों का शैक्षणिक मूल्यांकन एवं उसके परिणामों को अभिभावकों के साथ साझा करना एवं उनका फीडबैक प्राप्त करना।

इन सभी कार्यों के सुव्यवस्थित एवं सफल संचालन हेतु विद्यालय के प्रधानाध्यापक को कई बार पुरस्कृत किया जा चुका है।

6. विद्यालय अभिलेखः

विद्यालय के कुछ महत्पूर्ण अभिलेख भी होते हैं जो उपलब्ध एवं सुरक्षित हैं। इनमें प्रमुख हैंः–शिक्षक उपस्थिति पंजी, छात्र उपस्थिति पंजी, छात्र नामांकन पंजी, छात्र स्थानान्तरण प्रमाण पत्र निर्गत पंजी, अभिभावक–शिक्षक गोष्ठी पंजी, प्रधानाध्यापक–शिक्षक गोष्ठी पंजी, विद्यालय शिक्षा समिति पंजी, आदेश पुस्तिका, सूचना पंजी, मध्याह्न भोजन पोषाहार पंजी, निरीक्षण पंजी, रोकड़ पंजी ईत्यादि। इसके अलावा भी कई महत्वपूर्ण अभिलेख होते हैं जैसे पत्र निर्गत पंजी, पत्र आगत पंजी, विद्यालय सम्पत्ति पंजी, आंतरिक मूल्यांकन पंजी एवं अध्यापक की डायरी ईत्यादि। इन सभी अभिलेखों का रखरखाव प्रधानाध्यापक द्वारा किया जाता है।

7. विद्यालय के वित्तीय आय के साधनः

अपने अधिकांश वित्तीय कार्यों के सम्पादन के लिए विद्यालय सरकारी अनुदान पर निर्भर करता है। शिक्षा विभाग से छात्र संख्या के आधार पर विद्यालय विकास/रखरखाव हेतु प्राप्त राशि एंव मध्याह्न भोजन संचालन हेतु उपलब्ध करायी गयी राशि के सहारे ही विद्यालय का क्रमशः रखरखाव एवं मध्याह्न भोजन संचालन होता है। प्रत्येक वर्ष नूतन सत्रारंभ होते ही बच्चों को पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध करा दिये जाते हैं और उपस्थिति के आधार पर बच्चों के खाता में क्ठज् के माध्यम से सरकारी स्तर पर प्रोत्साहन राशि भेजी जाती है।

8. विद्यालय समय सारणीः

विद्यालय के सुव्यवस्थित एवं सरल संचालन हेतु समय सारणी की आवश्यकता होती है। हमारे विद्यालय में विभागीय नियमानुसार बनायी गयी अद्यतन समय सारणी है जिसके सहारे विद्यालय का संचालन 9:30 बजे से अपराह्न 4:00 बजे तक होता है। इसमें समय–समय पर विभागीय आदेशानुसार परिवर्त्तन भी होता है। समय से पूर्व शिक्षक एवं बच्चे विद्यालय आ जाते हैं एवं पूरी कार्यावधि के दौरान समय सारणी का अनुपालन करते हैं। दोपहर 12:40 बजे से 01:20 बजे तक मध्याह्न भोजन हेतु समय निर्धारित है। इसी प्रकार कम्प्यूटर, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, बागवानी एवं खेलकूद के लिए भी समय निर्धारित है। समय सारणी के अनुपालन हेतु प्रधानाध्यापक को काफी सचेष्ट रहना पड़ता है।

9. विद्यालय परिसरः

हरे–भरे पेड़ पौधों एवं बच्चों की किलकारियों से गुंजायमान विद्यालय परिसर की अनोखी छटा दृश्यमान है। इसी परिसर में बच्चों का उन्मुक्त बचपन पनपता है एवं शिक्षक अपने अनुभव को जमीन पर उतारते हैं। सचमुच कहा जाय तो राष्ट्र निर्माण की नींव यहीं डाली जाती है।

10. स्कूल पुस्तकालयः

विद्यालय के जीवन का यह महत्वपूर्ण केन्द्रीय स्थान है जहाँ विद्यालय के विकास का प्रत्येक क्षेत्र ज्योतिर्मय होता है। हमारा यह लघु पुस्तकालय हमारे विद्यालय के बौद्धिक उन्नयन, चारित्रिक निष्ठा एवं आध्यात्मिक जागरण का प्रतीक है। शैक्षिक नवजागरण के अग्रदूत इस पुस्तकालय में लगभग 850 पुस्तकें हैं। यहाँ शिक्षकों एवं बच्चों के लिए पुस्तकें उपलब्ध हैं और इसका संचालन विद्यालय की शिक्षिका शबाना नासरीन द्वारा किया जाता है।

11. विद्यालय प्रयोगशालाः

आधुनिक समय की पुकार है कि हर विद्यालय में प्रयोगशाला हो। संसाधनों के तमाम अभावों का सामना करते हुए विद्यालय में एक लघु प्रयोगशाला की स्थापना की गई है जिसका संचालन विज्ञान शिक्षिका ज्योति सिन्हा के द्वारा की जाती है। इस प्रयोगशाला में रसायन, भौतिकी तथा जीव–विज्ञान विषय से संबंधित कुछ उपकरण उपलब्ध हैं जिसके सहारे बच्चों को व्यवहारिक विज्ञान सिखाये जाते हैं। इसे समृद्ध बनाने हेतु प्रधानाध्यापक का निरंतर प्रयास जारी है।

12. स्कूली वातावरणः

विविध प्रकार के परिवेश, आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक पृष्ठभूमि से आनेवाले बहुआयमी प्रतिभा के धनी बच्चों के जिज्ञासु मन एवं उनकी प्रतिभा को तराशने में जुटे समर्पित एवं सुयोग्य शिक्षकों की टीम से स्कूली वातावरण की परिपूर्णता दिल को सुकून देने वाला प्रतीत होता है। विद्यालय में विभिन्न प्रकार के भौतिक वातावरण, नैतिक वातावरण, भावात्मक वातावरण, सामाजिक वातावरण, आध्यात्मिक वातावरण, सौन्दर्यात्मक वातावरण एवं मनोवैज्ञानिक वातावरण बनाये रखने के लिए हर संभव प्रयास किये जाते हैं।

13. प्रधानाध्यापक–शिक्षक एवं अभिभावक–शिक्षक संबंधः

विद्यालय के सर्वांगीण विकास में प्रधानाध्यापक–शिक्षक एवं अभिभावक–शिक्षक संबंध की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रधानाध्यापक के द्वारा शिक्षकों के साथ मधुर संबंध बनाए रखने के लिए उन्हें भरपूर सम्मान दिया जाता है एवं उनकी अपेक्षाओं एवं समस्याओं का भी ख्याल रखना पड़ता है। यही कारण है कि शिक्षक भी प्रधानाध्यापक का सम्मान करते हैं एवं उनकी अपेक्षाओं पर खरा उतरने का प्रयास करते हैं। बच्चों के साथ शिक्षकों का समर्पण एवं कर्त्तव्यनिष्ठ बनाये रखने के लिए प्रधानाध्यापक हमेशा तत्पर एवं जागरूक रहते हैं। विद्यालय को जीवंत बनाये रखने हेतु उनके साथ अच्छे संबंधों की आवश्यकता होती है। इसके लिए अभिभावकों से निम्नवत् सम्पर्क एवं संवाद स्थापित किया जाता हैः–

- प्रत्येक माह अभिभावक शिक्षक गोष्ठी (च्ज्ड) आयोजित कर।
- छात्रों के नामांकन के समय अभिभावक को आमंत्रित कर।
- अभिभावक दिवस मनाकर।
- पूर्ववर्त्ती छात्रों का संघ स्थापित कर।
- प्रगति प्रत्रक भेज कर।
- विद्यालय प्रत्रिका द्वारा।

- विद्यालय के उत्सवों में अभिभावकों को आमंत्रित कर।
- सामाजिक कार्यों में शामिल होकर।

14. पाठयेत्तर क्रियायें:

राष्ट्र के गौरव विद्यार्थियों को अनुशासनहीनता एवं उद्यंडता से बचाये रखने के लिए विद्यालय में पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकें एवं दैनिक रूटीन के अलावा पाठयेत्तर क्रियायें संचालित की जाती हैं। इनमें प्रमुख हैः– राष्ट्रीय त्योहारों का समारोहपूर्वक आयोजन, महापुरूषों की जयंती, स्वास्थ्य जाँच शिविर, हाथ धुलाई कार्यक्रम, शैक्षणिक प्ररिभ्रमण, सुरक्षित शनिवार, खेल–कूद प्रतियोगिता, रंगोली, चित्रांकन, मेंहदी प्रतियोगिता, भाषण, वाद–विवाद, क्वीज प्रतियोगिता, कहानी कथन, कविता वाचन, निबंध प्रतियोगिता ईत्यादि। हमारे विद्यालय के बच्चों ने इन सभी विधाओं में श्रेष्ठ प्रर्दशन करते हुए अनेक बार प्रखंड स्तरीय, जिला स्तरीय एवं प्रमंडलस्तरीय प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त किये है।

15. शैक्षिक नवाचार एवं परियोजना आधारित शिक्षणः

सामान्यतः शिक्षा में नवाचार से अभिप्राय होता है कि शिक्षा के क्षेत्र में आने वाली समस्याओं एवं चुनौतियों का नवीन तरीके से समाधान करना। आजकल ज्स्ड एवं थ्स्छ ज्ञप्ज् का प्रयोग भी इसी श्रेणी में आता है। इसके अलावा विद्यालय में मल्टी मीडिया एप्रोच, कम्प्यूटर शिक्षा, रेडियो विजन, इंटरनेट, शैक्षणिक दूरदर्शन, टेलिकॉन्फ्रन्सिंग द्वारा भी शिक्षण कार्य किये जा रहें हैं। प्रधानाध्यापक के नेतृत्व में विद्यालय के कुछ शिक्षकों यथा– रूपेश कुमार, ज्योति सिन्हा, मीनाक्षी कुमारी एवं शबाना नासरीन द्वारा न केवल नवाचारी तरीके से शिक्षण कार्य किये जा रहे हैं बल्कि परियोजना आधारित शिक्षण के माध्यम से बच्चों के मन–मस्तिष्क में विषय वस्तु की बुनियाद मजबूत की जा रही है।

16. स्थानीय मानव संसाधनः

स्थानीय समाज में कुछ उपयोगी मानव संसाधन भी उपलब्ध हैं जिनका सहयोग लेकर विद्यालय को आकर्षक एवं समृद्ध बनाने का प्रधानाध्यापक द्वारा प्रयास होता है। इनमें प्रमुख हैः– स्थानीय जनप्रतिनिधि, लोक गायक, चित्रकार, जादूगर एवं कुछ सम्पन्न समाजसेवी। इन्हें विभिन्न अवसरों पर विद्यालय में आमांत्रित कर सम्मानित किया जाता है एवं विद्यालय में इनका योगदान भी होता है। एक सम्पन्न समाजसेवी द्वारा विद्यालय में अध्ययनरत सभी बच्चों को स्कूल बैग एवं लेखन साम्रगी दिया गया है जबकि एक स्थानीय जनप्रतिनिधि द्वारा विद्यालय में 60 जोड़ी बेंच–डेस्क एवं 03 बुकसेल्फ प्रदान किया गया है। इन सभी का विद्यालय विकास एवं आकर्षण पर अत्यंत ही सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

17. निष्कर्ष एवं लक्ष्यः

उपर में वर्णित समस्त संसाधनों, प्रबंधनों एवं गतिविधियों का बच्चों के अधिगम स्तर पर बहुत ही सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। बच्चों की नियमित उपस्थिति में सुधार हुआ है, ड्राप आउट कम हुआ है एवं बौद्धिक विकास का स्तर ऊँचा हुआ है। इसके बावजूद अभी भी कुछ लक्ष्य शेष रह गये हैं जिनकी प्राप्ति के लिए पूरा विद्यालय परिवार समर्पित भाव से प्रयासरत है।